



## हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित औषधीय पौधों की किस्मों को कोयंबटूर में वैरायटी रिलीजिंग कमेटी द्वारा रिलीज़ किया गया

### Medicinal plant varieties developed by ICFRE-HFRI Shimla were released by Variety Releasing Committee (VRC) at ICFRE-IFGTB, Coimbatore

Variety Releasing Committee (VRC) of ICFRE was held at ICFRE-IFGTB, Coimbatore on 01 September 2023, under the Chairmanship of Sh. Chandra Prakash Goyal, IFS, DGF & Special Secretary, MoEF&CC, New Delhi and Co-Chairmanship of Sh. Arun Singh Rawat, IFS, DG, ICFRE, Dehradun. ICFRE-HFRI, Shimla proposed 05 varieties of three important high value temperate medicinal plants viz. *Picorhiza kurroa* (Kutki/Karu), *Valeriana jatamansi* (Muskbala/Sugandhwala) and *Sinopodophyllum hexandrum* (Bankakri/ Himalayan May Apple). The developers from ICFRE-HFRI, Shimla, Dr. Jagdish Singh, Scientist-G and Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G of these varieties, informed the committee members that the institute has been working on these medicinal plants for the past one and half decades. In the first phase superior genetic stock of these medicinal plants were identified and selected by screening geographical locations of Himachal Pradesh, and Ladakh, UT. Also established and maintained the Field Gene Bank (FGB) of the same at Field Research Station, Jagatsukh near Manali, H.P. In the second phase multi-location trials of identified superior geonotypes were established and cultivars of these medicinal plants were selected based on exhibiting high yield and total Picroside content (%), Valeopotriates content (%) and Podophyllotoxin content (%) in *P. kurroa*, *V. jatamansi* and *S. hexandrum* respectively and stability under different environmental conditions in the high hill temperate region of Himachal Himalaya. They further informed that by taking up the commercial cultivation, the farmers of high hill temperate region of Himachal Himalayas, can earn income upto Rs. 2, 76,000/- per ha. from *P. kurroa*, Rs. 1, 61000/- per ha. from *V. jatamansi* and Rs 2, 83000/- per ha. from *S. hexandrum*. After discussion the VRC granted approval for release of two varieties of *P. kurroa* as HFRI-PK-1 and HFRI-PK-2; two varieties of *V. jatamansi* as HFRI-VJ-1 and HFRI-VJ-2; and one variety of *S. hexandrum* as HFRI-SH-1, for taking up commercial cultivation by different stakeholders in high hill temperate region of Himachal Himalaya.

## Glimpses of Activities



## Media

# एच.एफ.आर.आई. ने की 3 शीतोष्ण औषधीय प्रजातियों की 5 किस्में तैयार

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने दी मंजूरी

शिमला, 4 सितम्बर (भूपिन्द्र): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एच.एफ.आर.आई.) शिमला में शीतोष्ण औषधीय पौधों के 3 प्रजातियों की 5 किस्में तैयार की हैं। इसमें कुटकी या कडू की 2, मुश्कवाला या सुगंधवाला की 2 तथा वन ककड़ी की 1 किस्म तैयार की है। इन किस्मों को संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डा. जगदीश सिंह तथा डा. संदीप शर्मा द्वारा कड़ी मेहनत के बाद विकसित किया है। इन पांचों किस्मों को केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा मंजूरी प्रदान की है।

इस मंजूरी का ऐलान भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद देहरादून की वैरायटी विमोचन समिति की तमिलनाडु के कोयंबटूर में हुई बैठक में किया गया। बैठक की अध्यक्षता महानिदेशक वन एवं



विशेष सचिव पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार चंद्र कुमार गोयल की अध्यक्षता में हुई। इन किस्मों के औषधीय पौधों के लगाने से किसानों को लाभ होगा।

एच.एफ.आर.आई. के निदेशक डा. संदीप तथा वैज्ञानिक डा. जगदीश सिंह ने बताया कि संस्थान पिछले डेढ़ दशक से इन औषधीय पौधों पर अनुसंधान कर रहा है। प्रथम चरण में हिमाचल व लद्दाख के भौगोलिक स्थानों की स्क्रीनिंग करके इन औषधीय पौधों के बेहतर आनुवांशिक स्टॉक की पहचान और चयन किया गया तथा इन्हें संस्थान के हिमाचल प्रदेश के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र जगत-सुख मनाली में फील्ड जीन बैंक स्थापित किया गया। द्वितीय चरण में पहचाने गए बेहतर जियोनोटाइप के बहु-स्थान परीक्षण किए गए।

खेती से किसानों को होगा लाभ : औषधीय पौधों की इन किस्मों की खेती से किसानों को लाभ होगा। इनकी व्यावसायिक खेती करके, उच्च पहाड़ी समशीतोष्ण क्षेत्र के किसान कुटकी से 2,76,000 रुपए, मुश्कवाला/सुगंधवाला से 1,61,000 तथा वन-ककड़ी से 2,83,000 रुपए प्रति हैक्टेयर तक की आय अर्जित कर सकते हैं। एच.एफ.आर.आई. के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने बताया कि यह शोध संस्थान के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इससे किसानों की आय बढ़ेगी।

\*\*\*\*\*